Dr.Uttam Kumar

S.R.A.P College,Barachakia
Mob.No.8210561032

Session -2023-27

Faculty - Commerce

Class-Second Semester

Subject -Business Organisation

'व्यवसाय' विज्ञान के रूप में (Business as Science)

व्यवसाय विज्ञान है अथवा नहीं, इस बात का निर्णय करने से पूर्व विज्ञान का अर्थ समझ लेना परम आवश्यक है। किसी विषय-वस्तु के बारे में व्यवस्थित ज्ञान के भण्डार को विज्ञान कहते हैं। यह व्यवस्थित ज्ञान प्रयोगों एवं निरीक्षणों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यह कारण (Cause) और परिणाम (Effect) के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। इस दृष्टि से व्यवसाय को भी विज्ञान कहा जा सकता है, क्योंकि यह भी व्यवस्थित ज्ञान का भण्डार है, जिसे कि प्रयोगों एवं निरीक्षणों द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह भी कार्य तथा कारण के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अनेक विद्वान व्यवसायियों एवं उद्योगपतियों ने अपने अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर विज्ञापन, विक्रय-कला, वैज्ञानिक प्रबन्ध, विवेकीकरण, श्रम-विभाजन आदि से सम्बन्धित सिद्धान्तों का निर्माण किया है, जोकि व्यवसाय के सिद्धान्त कहलाते हैं। सरकार भी विभिन्न व्यवसायों तथा उद्योगों के कुशल-संचालन और नियमन के लिए नियमों का निर्माण करती है, जैसे—व्यापारिक सन्नियम, औद्योगिक सन्नियम, कम्पनी अधिनियम आदि।

'व्यवसाय' कला के रूप में (Business as Art)

अब हमारे सामने दूसरा प्रश्न उठता है कि क्या 'व्यवसाय' कला भी है ? 'कला' किसी कार्य के करने की क्रिया को कहते हैं। दूसरे शब्दों में, कला हमें यह बताती है कि किसी कार्य को किस प्रकार करना चाहिए, ताकि हमें निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हो सके तथा अवांछनीय बातों से रक्षा की जा सके। इस दृष्टि से 'व्यवसाय' को हम कला कह सकते हैं। यह विषय प्रत्येक व्यवसायी को यह बताता है कि अपने व्यवसाय में अधिकतम सफलता प्राप्त करने के लिए उसे क्या करना चाहिए ? जो व्यवसायी इनके सिद्धान्तों का अनुकरण करता है, सफलता उसके कदम चूमती है। इसकी महत्ता को ध्यान में रखकर ही इस विषय पर अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में इस विषय की विशिष्ट शिक्षा भी प्रदान की जाती है। हमारे देश में ऐसे विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा-केन्द्रों का अभाव है जहाँ पर कि केवल इसी विषय से सम्बन्धित शिक्षा दी जाती हो। इस कमी को दूर करने की दिशा में प्रयत्न किये जा रहे हैं। कलकत्ता, दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, चेन्नई, लखनऊ, जोधपुर तथा जयपुर आदि में विश्वविद्यालय स्तर पर 'व्यावसायिक प्रबन्ध' की शिक्षा दी जा रही है। आशा है कि शेष क्षेत्रों के विश्वविद्यालय भी इनका अनुकरण करेंगे।

'व्यवसाय' कला एवं विज्ञान दोनों के रूप में

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'व्यवसाय' विज्ञान भी है तथा कला भी। किन्तु इसके सिद्धान्त अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों की भाँति उतने खरे नहीं हो सकते जितने कि भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र तथा जीवविज्ञान के। अतः व्यवसाय को एक **'व्यावहारिक सामाजिक विज्ञान'** (Practical Social Science) कहना अधिक उपयुक्त होगा।